International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-07-2022, Accepted: 11-08-2022, Published: 27-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 90-91

उषा प्रियंवदा जी के उपन्यासो में कामकाजी महिलाओं की समस्या

लल्ली त्रिपाठी[1], अमित शुक्ला[2]
[1] अ0प्र0 सिंह विश्वविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] टी.आर. एस. महाविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
''नारी जीवन और उसकी समस्याएँ सदा से ही साहित्य के विषय वस्तु के रूप में ग्रहण की गई है। समस्याएँ अधिकांशतः सामाजिक क्षेत्र में जन्म लेती है और उनका अधिकतर सम्बन्ध, नारी जाति से है। विविध समस्याओं और कुप्रथाओं ने नारी जाति को बड़ी दीनावस्था में पहुचा दिया है इसी समाज ने कभी नारियों को पर्दा प्रथा के नाम पर घर में बंदी बना के रखा तो कभी दहेज के नाम पर उन्हें जिन्दा जलाया गया। बाल विवाह से विधवा समस्या और वेश्या समस्याओं का जन्म हुआ स्त्री की दयनीय स्थिति का कारण समाज में जहा उनका स्त्री होना है, वहीं इन समस्यों का जुड़ना उसकी नियति बन गई है। जब वह घर में कैद भी तब भी उसकी ढेरों समस्याएँ थी और आज बाहरी दुनिया में भी उसका, पूरी तरह से शोषण किया जा रहा है। वास्तविकता यह है, कि समय बदला है लेकिन नारी की समस्याएँ वहीं के वहीं है सिर्फ उसका रूप और नाम बदला है।
साहित्यकार इसी समाज का साक्षी है। अतः इन सभी परिस्थिति का सीधा असर साहित्यकार पर पड़ता है और इसी से वह जो अनुभव करता है उसी को अपनी रचनाओं में वर्णित करता है। उषा प्रियंवदा जी ने इसी समस्याओं को केन्द्र में रखकर रचनाएँ की है। इन्होंने नारी के मन की गहराई मे जाकर नारी समस्याओं के प्रति उदासीनता को छाँटकर एक नई दृष्टि से नारी के अंतर्मन को झाँकने का प्रयास किया है। उषा जी ने आधुनिक युग की शिक्षित नारी और उससे जुड़ी समस्याओं को अपनी रचनाओं में मुखरित किया है । अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग ऐसी आज की आधुनिक नारी के जीवन में आने वाली ऊब, घुटन, संत्रास तथा अकेलेपन से जीवन में आने वाली रिक्तता तथा अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए संघर्षशील नारी का जो चित्रण उन्होने किया है वह हर पाठक को नारी जीवन तथा उसकी समस्याओं के प्रति सोचने को बाध्य कर देता है।

मूल शब्दः कामकाजी, आधुनिक, अस्तित्व, दीनावस्था, व्यक्तिगत

प्रस्तावना
आज के युग में सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन आया है। वहीं स्त्री और पुरुष की स्थिति में भी काफी बदलाव आया है। पहले स्त्री के लिए घर की चार दीवारें उसके लिए मानो पूरा संसार था। वह परआश्रित थी। अपने जीवनयापन के लिए उसे दूसरे पर आधार रखना पड़ता था। जबकि आज स्त्री की स्थिति इससे बिल्कुल भिन्न है। आज स्त्री भी पुरुष के सामान विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत है। आज वह निराधार नहीं है वह भी आर्थिक रूप से आत्म निर्भर है इसीलिए आज नारियों में भी व्यक्तिगत स्वातंत्र्य, प्रेम विवाह आदि के संबंध में आमूल परिवर्तन आया है। लेकिन इन सब के लिए उसे अंदर ही अंदर टूटना भी पड़ा है। इन्हीं परिस्थितियों को लेखिका ने यहाँ बखूबी चित्रित किया है 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' की नायिका सुषमा भी एक नौकरी पेशा युवती है, जिसे नौकरी के लिए अपने घर से दूर रहना पड़ता है। घर की सारी जिम्मेदारियाँ उसी पर है। इसी कारण घर और नौकरी के बीच उसकी स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती है। वह हमेशा इसी चक्की में पिसती रहती है।
समाज मे स्त्रियों का एक वर्ग ऐसा है जो अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण मजबूरी से नौकरी करती है तो कुछ कुँवारी शिक्षित युवती आत्म निर्भर बनने के लिए कार्यरत है। सुषमा भी इसी वर्ग से आती है सुषमा पर पूरे परिवार की जिम्मेदारी है, ऊपर से पक्षाघात पीड़ित पिता। सुषमा इस उत्तरदायित्व से कभी मुक्त नहीं हो पाती । पिता भी सुषमा की विवाह योग्य उम्र गुजरते देखकर भी विवाह संबंधी कोई बात–चीत नहीं करते। शायद इसी यौवनावस्था में उठती तरंगे सुषमा के मन को उद्वेलित कर देती है। सुषमा के जीवन में नील नाम का युवक आता है जो उसकी यंत्रवत् जिंदगी में खुशियों की बहार लाता है।
सुषमा कालेज मे अध्यापिका और होस्टेल की वार्डन हैं जो होस्टेल के नीति नियम की बड़ी पाबंदी है लेकिन वह लड़ कियों की स्वतंत्रता का हनन भी नहीं करती। नील, सुषमा से हमेशा उसी होस्टेल वाले बंगले में मिलने आता है, यह बात धीरे–धीरे सभी को मालूम पड़ जाती है । मिस शास्त्री जो सुषमा की सह अध्यापिका है, प्रिन्सिपल से इस बात की शिकायत करती है। अतः, नील से मिलने पर भी प्रतिबंध लग जाता है। प्रिन्सिपल सुषमा को नील या नौकरी में से किसी एक को चुनने को कहती है। इस तरफ नील जो उसके लिए सर्वस्व था वही दूसरी तरफ उसकी नौकरी है जिसके आधार पर उसका पूरा परिवार टिका हुआ था और इसी कारण वह अंत में नील से मिलने को मना कर देती है वह कहती है, ...''मेरी बहुत सारी जिम्मेदारियाँ है .ये कालेज, ये खम्भे मेरी डेस्टिनी है .....।''

इस प्रकार सुषमा चाहकर भी नील से विवाह नही कर पाती और अपनी नौकरी को अग्रिमता देती है क्योंकि वह उसके परिवार के लिए आवश्यक है। सुषमा के माध्यम से लेखिका ने एक नौकरी करती युवती के भावात्मक संघर्ष का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है।

जबकि नारियों का एक वर्ग ऐसा भी है जो अपने शौक लिए नौकरी करता है । इस वर्ग का प्रतिनिधित्व 'रुकोगी नही राधिका' उपन्यास की नायिका राधिका करती है। राधिका स्वच्छन्दी मिजाज वाली लड़की है । नौकरी करना राधिका की कोई मजबूरी नहीं है लेकिन जब डैन उसे छोड़कर चला जाता है तब अपने अकेले पन को दूर करने के लिए वह पार्टटाइम नौकरी करती है।

आज के युग में स्त्री की स्थिति में थोड़ा सुधार तो आपा है लेकिन फिर भी उसकी समस्याओं मे ज्यादा परिवर्तन नही हुआ । पुरुष के समान ही हर क्षेत्र में कार्यरत. होने के बावजूद भी वह अपनी पारिवारिक समस्याओं से बाहर नही निकल पाती और नौकरी तथा परिवार के बीच पिसती रहती है। इस उपन्यास में ऐसी नारियों का प्रतिनिधित्व इस उपन्यास की दूसरी स्त्री पात्र विद्या करती है। विद्या कालेज में अध्यापिका है जिसने अपने से 20–25 वर्ष बड़े वकील से शादी की है लेकिन शादी करने के बावजूद भी वह दुखी है और इसी पीड़ा से त्रस्त होकर वह अंत में आत्महत्या कर लेती है। विद्या के पास अच्छी नौकरी, पति सब कुछ था लेकिन फिर भी उसके जीवन का अंत बहुत करुण होता है क्योंकि जिंदगी में जो शांति चाहिए, वह उसे कभी नहीं मिली थी।

हमारे समाज में एक वर्ग भी है जहाँ स्त्रियी एक आदर्श गृहिणी बनकर अपने घर परिवार को संभालती है जिन्हें बाहर की दुनिया का कोई ज्ञान नहीं है। ऐसी स्थिति में अगर पति की मृत्यु हो जाती है या पति द्वारा छोड़ दी जाती है तब अपना जीवन कैसे गुजारा जाये यह एक समस्या खड़ी हो जाती है। तब न चाहते हुये भी ऐसी नारियों को बाहर कदम रखना पड़ता है । ऐसी ही नारी का प्रतिनिधित्व लेखिका के तीसरे उपन्यास 'शेष यात्रा' की नायिका अनुका करती है।

उपन्यास की नायिका अनुका पूर्वार्द्ध में बिलकुल सीधी–सादी थी । जो पहले अपने मामा – मामी पर आश्रित थी। बाद में पूर्ण रूप से अपने पति प्रणव पर आश्रित है। लेकिन वही प्रणव जो उसे रानी बनाकर रखने की बात करता था वही प्रणव चन्द्रिका नाम की युवती से विवाह कर अनु को तलाक देता है । अनु तब अपने आपको सम्भाल नहीं पाती है उसे लगता है कि अब उसके जीवन का कोई मतलब नही है। तब उसकी बचपन की सहेली दिव्या उसे भी धैर्य बंधाती है और अपने आपको कमजोर न मानने की सलाह देती है। अनुका अपनी मेहनत से पढ़ाई करके प्रणव को दिखा देती है। आज वह सफल डॉ0 है। वह कहती है.....

''मैं हूँ अनु, अपने मे तुश्ट, अपने में अपने स्वत्वबोध में सुखी, अपने सुख–दुख में अकेली, अपने में स्वाधीन, अपनी डॉक्टरी की उपाधि तो होगी सुख चैन से रह सकेगी। काम करने का संतोष तो मिलेगा स्थायी रूप में पुरुष जीवन में न हो तो न हो, जरूरत भी किसे है ?''

इसीलिए यहाँ पर डॉ. रामदरश मिश्र का उपर्युक्त कथन यथार्थ लगता है :– ''नौकरी करते रहने या चाहकर भी न छोड़ पाने की विवशता दुहरी हैं। एक ओर घर की आवश्यकताओं की दी हुई मजबूरी है तो दूसरी ओर अपनी शिक्षा और ज्ञान को प्रयोग में ला सकने का आत्म संतोष की प्राप्ति की चाह भी है।''

इस प्रकार आज की नारी आत्मनिर्भर बनकर स्वच्छन्दी जीवन जीती है। आज तक जिस पुरुष वर्ग ने उसे गुलामी की बेड़ियों से जकड़ रखा था, उसमें से वह अपने आप को आजाद कर पायी हैं। लेकिन बाहर की समस्याएँ तो है ही लेकिन आज नारी अपनी हर परिस्थिति के साथ लड़कर आम संतोष से जीवन जीती है ।

संदर्भ सूची

1. पचपन खम्भे लाल दीवारें, उषा प्रियंवदा
2. रुकोगी नहीं राधिका उषा प्रियंवदा
3. शेषयात्रा, उषा प्रियंवदा
4. नारी शोषण समस्याएँ एवं समाधान, सं. डॉ. राजकुमार
5. नारी शोषण समस्याएँ एवं समाधान, सं. डॉ. राजकुमार
6. शेष यात्रा, उषा प्रियंवदा